



अमरावती जिले में वर्षा विचलन का प्रमुख फसलों के वितरण पर प्रभाव —

एक भौगोलिक अध्ययन

प्रा. पराग श्री. मेश्राम

भूगोल विभाग प्रमुख म. गां. कला, विज्ञान व स्व. न. पं. वाणिज्य महाविद्यालय,
आरमोरी, जि. गडचिरोली.

प्रस्तावना :—

हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है। ज्ञातव्य है कि महाराष्ट्र में कृषि का ८५% क्षेत्र मानसून पर निर्भर है। इस कारणवश जिन जिलों में वर्षा की मात्रा कम होती है, उसका सीधा प्रभाव फसलों के उत्पादन व वितरण पर पड़ता है। इस समस्या के निवारण हेतु जल सिंचाई के साधनों की व्यवस्था करना जादा महत्वपूर्ण है।

समस्या कथन :—

अमरावती जिले की असमान भौगोलिक संरचना के चलते कुछ क्षेत्र शुष्क व कुछ औसत वर्षा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। सिंचाई के साधनों की कम उपलब्धता के कारण यहां की कृषि लगभग पूर्णतः मानसून पर आधारित कही जा सकती है। मानसून की अनिश्चित प्रकृति के कारण इसका सीधा प्रभाव यहां की फसलों के वितरण पर पड़ता है। अमरावती जिले के शस्य संयोजन पर वर्षा विचलन का प्रभाव देखा जाता है। अध्ययनित शोध-पत्र में अमरावती जिले की निम्न प्रमुख फसलों — गेहूँ, ज्वार, चना, तुअर, कपास व सोयाबीन के वितरण पर वर्षा के विचलन के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :—

अमरावती जिला महाराष्ट्र राज्य के पश्चिम विदर्भ में स्थित है। जिसका अक्षांशीय और देशांतरीय विस्तार क्रमशः २०°३२' उत्तर से २१°७६' उत्तर अक्षांस व ७६°३७' पूर्व से ७८°२७' पूर्वी देशांतर है। अमरावती जिले का क्षेत्रफल १२,२१२ कि.मी.^२ है। जिले में कुल १४ तहसिलें, ११ शहर और १६७९ कस्बे हैं।

उद्देश्य :—

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं —

- १) वर्षा के ३१ वर्षों के आंकड़ों का दशकीय विश्लेषण करना।
- २) फसलीय वितरण के ३१ वर्षों के आंकड़ों का दशकीय विश्लेषण करना।
- ३) इन विश्लेषणों के आधार पर ३१ वर्षों में फसलों के वितरण में आए परिवर्तन को ज्ञात करना।

आंकड़ों का स्रोत :—

प्रस्तुत शोध-पत्र में अध्ययन के विश्लेषण हेतु द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। ये आंकड़े जिला सांख्यिकीय कार्यालय, अमरावती से प्राप्त किये गये हैं।

जिले में वर्षा विचलन :—

संपूर्ण महाराष्ट्र में वर्षा का वितरण ८०% से कम दिखाई पड़ता है। अमरावती जिले की भौगोलिक असमानता के चलते इसमें और भी विचलन पाया जाता है। इस कारणवश जिले का अधिकतर क्षेत्र पानी की कमी से प्रभावित है। जिसका सीधा असर फसलों के उत्पादन पर दिखाई

